प्रारम्भ करने के प्रस्तावित निश्चय के बारे में ; तथा
नागा विद्रोहियों द्वारा पकड़े गये भारतीय वायु सेना के
अधिकारियों के बारे में वक्तव्य

**सार्थों के नाम 'काली सूची' में दर्ज किया जाना**

†१४०. **श्री मुरारका** : क्या **वाणिज्य तथा उद्योग** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) पिछले १० वर्षों में कितने सार्थों के नाम 'काली सूची' में दर्ज किये गये ;

(ख) उसके क्या कारण हैं ;

(ग) क्या उन में से किसी ने सरकार के निर्णय के विरुद्ध कोई अभ्यावेदन किया है; और

(घ) यदि हां, तो उस पर क्या कार्यवाही की गयी ?

†**वाणिज्य तथा उद्योग मंत्रालय में अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार मंत्री (श्री मनुभाई शाह)** :(क) ८५८ (१–१–१९५२ से ३१–१२–१९६१ तक) ।

(ख) आयात तथा निर्यात (नियंत्रण) अधिनियम, १९४७ के उपबन्धों और उसके अधीन बनाये गये आदेशों के उल्लंघन के लिये ।

(ग) जी, हां ।

(घ) ऐसे अभ्यावेदनों पर ध्यानपूर्वक विचार किया जाता है और जहां कहीं आवश्यक होता है 'काली सूची' में उनके नाम लिखने के पूर्व निर्णय में संशोधन कर दिया जाता है ।

---

(i) संयुक्त राज्य अमेरिका के परमाणु परिक्षणों को पुनः प्रारम्भ करने के प्रस्तावित निश्चय के बारे में ; तथा

(ii) नागा विद्रोहियों द्वारा पकड़े गये भारतीय वायु सेना के अधिकारियों के बारे में वक्तव्य

†**प्रधान मंत्री तथा वैदेशिक-कार्य मंत्री तथा अणुशक्ति मंत्री (श्री जवाहरलाल नेहरू)** : अमरीका द्वारा आणविक परीक्षण पुनः प्रारम्भ करने और इस परीक्षण के फल-स्वरूप भारत प्रभावित होने के कारण जो स्थिति उत्पन्न होगी उसके बारे में एक वक्तव्य देने के लिये लोक सचिवालय से एक सूचना मुझे प्राप्त हुई है । मुझ से कहा गया है कि मैं कल इस बारे में वक्तव्य दूं किन्तु कल मैं यहां नहीं रहूंगा अतः उस बारे में आज ही संक्षेप में कुछ बताने के लिये आपकी अनुमति चाहता हूं ।

पहली बात तो यह है कि यदि ये परीक्षण हुए तो हवा के रुख के अनुसार रेडियो-धर्मी धूल के किसी भी दिशा में जाने की संभावना रहेगी । यदि ये परीक्षण अधिक संख्या में किये गये तो कठिनाई और भी अधिक होगी । इसके अलावा इस प्रकार के परीक्षणों का होना हमारे लिये बड़ी चिंता की बात है । दुर्भाग्यवश गत वर्ष सोवियत संघ ने परीक्षण प्रारम्भ करके परीक्षण न किये जाने के करार को खत्म कर दिया था और तब से कुछ

---

†मूल अंग्रेजी में

अन्य देशों द्वारा भी कुछ परीक्षण किये गये हैं । परीक्षणों के सम्बन्ध में पारस्परिक होड़ बहुत खेदजनक है विशेषकर, जब कि जेनेवा में निःशस्त्रीकरण के सम्बन्ध में विचार करने के लिये सम्मेलन हो रहा है । यदि इन मामलों पर हो रही चर्चा के समय कोई परीक्षण किये जाते हैं तो उनका सम्मेलन पर बहुत बुरा प्रभाव पड़ेगा और कम से कम निकट भविष्य में किसी करार का हो सकना अत्यंत असंभव सा हो जायेगा।

जेनेवा सम्मेलन में सम्मिलित कुछ तटस्थ देशों ने कुछ प्रस्ताव पेश किये थे जिन पर अणुशक्ति वाले देशों ने विचार करना स्वीकार कर लिया था । चर्चा की समाप्ति के पूर्व यदि कोई परीक्षण किया जाता है तो वह उस चर्चा में बहुत बाधक होगा ।

प्रत्येक परीक्षण से कुछ हानि अवश्य होती है। रेडियोधर्मी धूल की मात्रा हन परीक्षणों के कारण निरंतर बढ़ती जा रही है । और एक समय आयेगा जब कि यह बहुत खतरनाक सिद्ध होगी । असली बात तो यह है कि इन परीक्षणों से वातावरण क्रमशः खराब होता जायेगा और वास्तविक युद्ध छिड़ जाने की संभावना रहेगी । यही कारण है कि जेनेवा में एक बैठक हो रही है । मुझे डर है कि इस प्रकार के परीक्षणों से करार होने की संभावना कम हो जाती है । तथा निःशस्त्रीकरण सम्मेलन की असफलता की संभावना और भी अधिक बढ़ जाती है । अतः मेरा विचार है कि मेरा ही नहीं बल्कि इस सभा के प्रत्येक सदस्य का यह विचार होगा कि ये आणविक परीक्षण न हों और विशेष रूप से उस समय जब कि जेनेवा में एक निःशस्त्रीकरण सम्मेलन होने जा रहा है । जब सवाल यह उठता है कि ये परीक्षण क्यों होते हैं तो ऐसा मालूम पड़ता है कि ये परीक्षण सैनिक कारणों से किये जाते हैं । शायद हर दल यह सोचता है कि इन परीक्षणों के बाद यह मालूम हो सकेगा कि किसके पास कितने शक्तिशाली हथियार हैं । तथा उन हथियारों को और किस प्रकार प्रभावी ढंग से प्रयुक्त किया जा सकता है । हो सकता है कि इसमें कोई सैनिक न्यायसंगति हो लेकिन मेरे विचार से तो इसके अलावा भी कुछ और महत्वपूर्ण बातें हैं । मेरा तो विचार है कि यदि यह होड़ जारी रही तो दोनों पक्ष अधिकाधिक भयंकर हथियार तैयार कर लेंगे जो न केवल दूसरे पक्ष को नष्ट करेंगे वरन् स्वयं उनको और समस्त विश्व को ही नष्ट कर देंगे । अतः अणुशक्ति वाले देशों से मेरी अपील है कि वे ऐसे परीक्षण न करें और जेनेवा सम्मेलन को कोई समझौता कर लेने का मौका दें ।

अतः हमें इस बात से बहुत चिंता है कि ये परीक्षण पुनः किये जायेंगे क्योंकि यह भी संभावना है कि यदि अमरीका ने प्रारम्भ किया तो रूस भी फिर करेगा। यह सवाल किसी खास दल का नहीं है। अतः मेरा यही निवेदन है कि ये परीक्षण इस समय न किये जायें।

†**अध्यक्ष महोदय** : इस सिलसिले में क्या प्रधान मंत्री श्री हेम बरुआ के पत्र का उल्लेख करेंगे ?

---

†मूल अंग्रेजी में

†**श्री जवाहरलाल नेहरू** : श्री हेम बरुआ ने अपने पत्र में लिखा है कि नागा विद्रोहियों द्वारा हमारे "एयरमैनों" को बन्दी बनाने के सम्बन्ध में प्रतिरक्षा मंत्री ने जो वक्तव्य दिया है उसमें कुछ भलें हैं ।

यह भूल इस कारण हुई है कि कुछ अतिरिक्त जानकारी बाद को मिली । इस सम्बन्ध में कोई निश्चित सूचना देना बहुत कठिन है । इतना ही कहा जा सकता है कि बर्मी राज्य क्षेत्र में बर्मी सैनिकों की नागा विद्रोहियों से टक्कर हुई थी और उन्होंने एक दल को घेर लिया था । यह संभव है कि नागा विद्रोहियों ने हमारे जो एयरमैन पकड़ लिये थे वे उनमें शामिल हों इसके अतिरिक्त कोई और सही बताना बड़ा मुश्किल है क्योंकि हम कुछ जानते नहीं । हम बर्मा जा नहीं सकते हमें उन्हें अपनी सीमा पर ही रोकना है । हम केवल वर्मी प्राधिकारियों की सहायता से ही वहां जा सकते हैं । और वे ऐसा नहीं चाहते । फिर भी वे हमारी सहायता कर रहे हैं और वहां जाने वाले नागाओं के विरुद्ध कार्यवाही कर रहे हैं ।

†**श्री नाथ पाई** (राजापुर) : प्रधान मंत्री ने जैसा कि बताया है कि सरकार इस प्रकार के परीक्षणों के बारे में चिंतित है तो क्या वह चिन्ता अमरीकी सरकार को बताई गई है ? और यदि हां, तो इस बारे में उनकी क्या प्रतिक्रिया हुई ?

†**श्री जवाहरलाल नेहरू** : हमने कई बार तथा विभिन्न विभिन्न अवसरों पर इस बारे में अपने मत प्रकट किये हैं । हां, हमने अमरीका को इस बार कुछ नहीं लिखा है वह भी इस कारण से कि वह हमारे विचारों से भली भांति परिचित हैं और कई बार हम अपने विचार विभिन्न अवसरों पर प्रकट भी कर चुके हैं । फिर भी मुझे इस बात का पूरा भरोसा है कि यह बात भी उनके कानों तक पहुंच जायेगी । यह तो मैं नहीं जानता कि वे निर्णय क्या करेंगे किन्तु इतना अवश्य है कि हमारी संसद् में क्या कहा गया है इस पर काफी ध्यान देते हैं ।

प्रोफेसर रसेल से हमें सूचना प्राप्त हुई है कि हम वहां एक युद्धपोत भेंजे और हो सकता है कि इस युद्ध पोत के कारण यह परीक्षण रुक जायें । किन्तु मेरी समझ में यह बात कुछ आई नहीं ।

†**श्री हेम बरुआ** (गोहाटी) : मैंने अपने पत्र में स्पष्ट रूप से लिखा है कि विदेश मंत्रालय में राज्य मंत्री ने जो वक्तव्य राज्य सभा में दिया है तथा प्रतिरक्षा मंत्री ने जो वक्तव्य दिया है उसमें कुछ भूल है । लेकिन फिर भी मैं यह जानना चाहता हूं कि ये "एयरमैन" आजकल कहां हैं क्या वे बर्मी सीमा में हैं अथवा अब भी नागा विद्रोहियों के बंदी हैं ।

†**श्री जवाहरलाल नेहरू** : मैंने अभी बताया है कि वास्तविक स्थिति क्या है अभी तक इसका पता नहीं चल सका है । कुछ नागा विद्रोहियों का कहना है कि वे अब भी बर्मी सीमा में हैं तथा कुछ लोगों का कहना है कि उन्हें छोड़ दिया गया है लेकिन इसकी पुष्टि नहीं हुई है । इसलिये सही बात क्या है । इसके बारे में कुछ नहीं कहा जा सकता । यह अभी तक संदेहजनक है कि उनको छोड़ दिया गया है अथवा उन्हें भविष्य में छोड़ा जायेगा ।

---

†मूल अंग्रेजी में